

---

# Sarva Deva Devi Sadbhakti Sumaguchcham

सर्व देवदेवी सद्भक्ति सुमगुच्छम्

## Document Information

---

Text title : Sarva Deva Devi Sadbhakti Sumaguchcham

File name : sarvadevadevIsadbhaktisumaguchCham.itx

Category : devii, vishhnu, krishna, shiva, raama, gurudev, sarasvatI, sangraha, ganesha, shataka

Location : doc\_devii

Author : Smt. Rajeshwari Govindaraj

Transliterated by : Smt. Rajeshwari Govindaraj

Proofread by : Smt. Rajeshwari Govindaraj

Latest update : January 30, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

सर्व देवदेवी सद्भक्ति सुमगुच्छम्



ॐ

ॐ कार नादानुरक्तं मडागणपतिं सर्वाभीष्टप्रदायकं  
सर्व कार्यारम्भादि पूजितं उमाशङ्कर सुभकारकं  
गजकर्णकं गजमुषं गीतसुधाप्रियम् उपास्महे  
स्मरामहे भजामहे ॥

१ गणेशगीतम्

पार्वती नन्दनं विद्मविनाशकं  
प्रथमार्थित यरणं उपास्महे ॥ पल्लवि ॥

पाशाङ्कुशधरम् सर्व विद्महरं  
भवसञ्चित पाप तिमिरहरं भास्करं  
मूलाधार यङ् नीवासिनं  
सुरराजार्थितं स्मरामहे ॥ १ ॥

मूषिक वाहनं लम्बोदरं  
स्कन्दपूर्वजं वीतरागिणं  
जगत्पावन कारणं अजं  
परम शुभङ्करं भजामहे ॥ २ ॥

२ सरस्वती गीतम्

परमपद सोपानारोहणं भाग्यं देहि मे वागीश्वरि  
निजभक्ति स्वाद्युत आत्मबलं देहि मे योगेश्वरि  
ज्ञानेश्वरि ॥ पल्लवि ॥

अम्बुजासनं लृष्टयेश्वरि सप्तस्वर सम्पदेश्वरि

रागलयभावाकरि  
तुम्भुरु नारद द्विविजादि कीर्तिते  
परब्रह्म सेवाधुरन्धरि  
परानाद बिन्दु कलामन्दिर नाट्यमयूरि  
नटनरत किन्नरि  
श्रुतिस्मृति गीतादि दिव्यग्रन्थरूपधरि  
सुगीतसुधाकरि ॥ १ ॥

मडाविचित्र पद यदुरङ्ग विनोदिनि  
मडोदये मडाद्भुत वाच्यार्थ गूढार्थयुत भाषाश्रये  
विविधाक्षर पद भाव संयोजक  
प्रतिभा वीणावादनप्रिये  
भाषण गायन चिन्तन स्फुरण लेखन ।  
यात्रीकोऽस्मि तव परितुष्टये ॥ २ ॥

### ३ गायत्री गीतम्

श्लोक ॥ ब्रह्मतेजो विवर्धनि ब्रह्मास्त्ररूपिणि  
ब्रह्मलोक निवासिनि परब्रह्मरूपिणि  
पञ्चभूतरूपिणि पञ्चभुषि त्रिलोचनि  
पञ्चकवेश डारिणि प्रणतार्तिविनाशिनि ॥ पल्लवि ॥

शुवकोटिपावनि गायत्रि जननि  
सप्तकोटि मडामन्त्ररूपिणि  
प्रातःसन्ध्यार्थिते उंसवाडनि  
अपराहोपासिते गरुडवाडनि  
सायं सन्ध्यार्थिते वृषभवाडनि  
सर्वकालपूजिते मडायोगिनि ॥ १ ॥

दिव्यपथ सञ्चारिणि जयशालिनि  
दिव्यमोद दायिनि चारुडासिनि  
धीशक्ति प्रयोदिनि बन्धमोचनि  
दुरितविदूरिणि दीक्षारूपिणि ॥ २ ॥

छ्छाशक्तिप्रसादिनि कल्याणि

ज्ञानशक्ति प्रकाशनि ब्रह्माणि  
द्वियाशक्ति सञ्चालिनि देवि भवानि  
सर्वशक्तिदायिनि गीतसुधावनि ॥ ३ ॥

## ४ सरस्वती गीतम्

ज्ञानरत्नाकरि श्रेताम्भरि  
वीणा पुस्तक जपमालाधरि ॥ पल्लवि ॥  
वाज्मानसगोचर लोकावनि  
वाक्यज्जि दायिनि वैभरीयावनि  
रससिद्धि प्राप्तिप्रिय सम्पोषिणि  
सरस विरसातीत सामरस्य बोधिनि ॥ १ ॥  
याञ्चत्य दोषापहारिणि हरिणि  
यापत्य कालुष्य दूरिणि जननि  
सकल कलापोषिणि गीतसुधावाहिनि  
अभिलानुभवसार रसवारुणि ॥ २ ॥  
मोड प्रमादवश भक्तोद्धारिणि  
कामकामी मनोसंशुद्धिकारिणि  
प्रेमयोगनिरत दैन्यनिवारिणि  
ध्यानमौनप्रतान्ते दीप्तिवर्धिनि ॥ ३ ॥

## ५ लक्ष्मी गीतम्

रम्यवेणी रमा पल्लवपाणी  
आगच्छतु विष्णुना सह सौम्यनयनी ॥ पल्लवि ॥  
क्षीरसमुद्र राजकुमारी  
रक्षतु मां ज्ञानदीपाङ्कुरी  
ब्रह्माण्ड भाण्डोदरी दयासागरि  
रक्षतु मां कोल्हापुरीश्वरी ॥ १ ॥  
जड निद्रावस्य वश श्रितोद्धारिणी  
जड येतनमय भुवनैकपालिनी

भोगापवर्ग प्रदायिनी लक्ष्मी  
रक्षतु मां सदा श्रीवरलक्ष्मी ॥ २ ॥

चिन्ताग्री शमनकरी यशस्करी  
सत्वगुण वृद्धिकरी श्रेयस्करी  
चन्द्रसखोदरि अभयङ्करी  
रक्षतु मां वैकुण्ठाधीश्वरी ॥ ३ ॥

### ६ दुर्गा गीतम्

श्रीयङ्गराज सिंहासनासीने  
त्वां स्मरामि भानुचन्द्र नयने ॥ पल्लवि ॥

कदली वन सञ्चारिणि  
आधारादि षट्पङ्क निवासिनि  
सदसद्भिवेक शील सुज्ञानदे  
सर्वकरुण निग्रह शील मोददे ॥ १ ॥

दैत्यमर्दिनि माते मङ्गवदने  
दया क्षमापूरिणि मङ्गलासवदने  
कालि मङ्गलाकालि नवदुर्गा रूपधरि  
दुरित क्षयकरि वरदे बिम्बाधरि ॥ २ ॥

नास्तिक वाद धुरीणापजयकारिणि  
आस्तिक मङ्गलशय भक्ति भुक्ति दायिनि  
विश्वरूप प्रदर्शिनि अष्टादशभुजे  
गीतसुधा स्वादिनि दुष्टयाब्जे विरजे ॥ ३ ॥

### ७ सरस्वती गीतम्

शृङ्गेरि पुराधीश्वरि शुक्धरि  
अक्ष मालिकाधरि उ अरुणाम्बरि ॥ पल्लवि ॥

उ विद्यासागरि विरिञ्चि मनोहरि  
विश्वैक शृम्भकरि पालय मां  
स्वस्थमानसकरि स्वस्थापहरि

सुधा कुम्भधरि गीतसुधाकरि ॥ १ ॥

डे सर्वाक्षर मूल प्रणवप्रकाशकि  
सर्वशास्त्र ज्ञान सम्पत्प्रदायकि  
अनुपम गुणवर्धकि पालय मां  
अन्तरवलोकन पारवश्य दायकि ॥ २ ॥

डे शास्त्रशरीरिणि शास्त्रसंरक्षिणि  
शास्त्रकोविद स्तुत कोटितन्त्र स्वामिनि  
ऋषिद्वयवासिनि ब्रह्मतत्त्वसौधामिनि  
ऋषिस्फुरण प्रकटित नवभाव स्रोतत्रुपिणि ॥ ३ ॥

### ८ सरस्वती गीतम्

गीर्वाणि कलवाणि वीणापाणि  
गीतसुधावनि यतुरास्यभामिनि ॥ पल्लवि ॥

बुधजनरञ्जनि रसिकसम्मोडिनि  
ऐङ्कार जपतोषिणि भक्तिज्ञान दायिनि ।  
धूम्रलोचन सूदनि अमयदायिनि  
शुम्भासुर मर्दिनि शास्त्रत्रुपिणि  
सुमूर्तत्रुपिणि सुवासिनि  
सौभाग्यवर्धिनि सुडासिनि ॥ १ ॥

मडाश्रये मडापापनाशिनि  
मडोदये मडोत्साडकारिणि  
नवरस सुधाम्बुनिधि विडारिणि  
नवनवोन्मेष शालिनि जननि ॥ २ ॥

### ९ राजराजेश्वरि गीतम्

सडस्रार विन्धाद्रि सदन गतिस्त्वं  
द्रीङ्कार मन्त्रजप इलदे गतिस्त्वम् ॥ पल्लवि ॥

त्वमेव माते कन्याकुमारि  
त्वमेव त्राते दुर्गापरमेश्वरि

त्वमेव दाते राजराजेश्वरि  
त्वमेव ब्रह्माण्ड भाण्डोदरि ॥ १ ॥

ज्ञान सिंहासनासीने शुभदे  
सिंहवाङ्मनि सर्वकर्मकूलदे  
रक्तवस्त्रधरि वरदाभयकरि  
असीम तेज वीर्य मोदसागरि ॥ २ ॥

युक्तायुक्त कर्माथराण प्रबोधिनि  
सत्यासत्य विवेचन प्रकाशिनि  
तारतम्य भेदसाम्य निर्देशिनि  
सुश्राव्य गीतसुधोल्वासिनि ॥ ३ ॥

### १० लक्ष्मी गीतम्

श्रीकान्त भामिनि श्री मङ्गलक्ष्मि  
श्रीप्रदायिनि अवतु माम् ॥ पल्लवि ॥

धन्वुभगिनि धम्सितदायिनि  
धन्वुमुष्णि धम्षणत्रयदारिणि  
श्रेयोकारिणि प्रेयोपालिनि  
अष्टैश्वर्य प्रदायिनि अवतु माम् ॥ १ ॥

शुवपावनि शुवभल वार्धिनि  
क्षीराब्धि नन्दिनि गीतसुधावनि  
आधेन्तरहित वैभवशालिनि  
स्थैर्य सौष्यदायिनि अवतु माम् ॥ २ ॥

### ११ दुर्गादेवी गीतम्

विश्व मोडक लावण्ययुते देवि रक्ष मां  
आदिपराशक्ति राजर्षिनुते संरक्ष माम् ॥ पल्लवि ॥

सप्तमातृका उपधारिणि जगज्जननि  
तप्त नतजनावनि आश्रित भक्तपावनि  
ब्रह्म विष्णु शम्भु द्विविजवृन्स्थित शक्तियुते

लोककण्ठक मडिषासुर मर्दिनि जगत्राते ॥ १ ॥

दुर्गा भवानि त्वं स्वर्गापवर्गप्रदे  
सर्गयुक्त बन्धमोयनप्रिय भक्तिशक्तिप्रदे  
रक्तबीजासुर निपातिनि त्रिशूविनि  
शुम्भनिशुम्भ मदहारिणि सिंहाडनि ॥ २ ॥

घण्टिनि शङ्भिनि यडिणि गदिनि यन्द्रार्कलोयनि  
धनुर्धारिणि शरप्रयोगवीला विनोदिनि  
दिव्य शरीरधरि ढ्रीङ्गार तरुमञ्जरि  
दिव्यमात्याम्बरधरि गीतसुधासागरि ।  
डिणि डिणि डिङ्गिणि घण्टानाद शङ्भनाद  
स्वरुपिणि मङ्गलं तन्त्रीनाद ।  
तालनाद वेणुनाद मृदङ्गनाद स्वरुपिणि ।  
मङ्गलं भेरीनाद मेघनाद मङ्गलम् दशनाद मङ्गलं  
परमात्म सान्निध्यमोदनाद मङ्गलं जय मङ्गलं  
सर्वमङ्गलम् ॥

## १२ सरस्वती गीतम्

श्री वागीश्वरि ब्रह्मविद्यासागरि  
श्रद्धा मेधाङ्कुरि प्रज्ञाधारण गोचरि ।  
रक्षय मां पालय माम् ॥ पल्लवि ॥  
छिमसदृश कान्तिवति श्री मडासरस्वति  
दानकर्म वृष्टिरति यतुर्मुप प्रियसति  
त्वमेव गायत्रि धीप्रयोदयिनि  
त्वमेव सावित्रि सद्विद्यादात्रि ॥ १ ॥

ऐङ्गार जप रागिणि पाशाङ्कुशधारिणि  
अक्षमाला पुस्तकधारिणि भवतारिणि  
ब्रह्ममानस सरोवर विडारिणि  
सर्वजनपावनि धुलोकवासिनि ॥ २ ॥  
सर्व वर्ण पद वाङ्मार्थरुपिणि



शुद्धचित्तं दर्पणं वाच्यार्थं बोधिनि  
रुद्रादित्यरूपिणि त्रिलोकं नियन्त्रिणि  
आद्यन्तरहितं तरङ्गिणि रञ्जनि ॥ ३ ॥

परा पश्यन्ती मध्यमा वैभरी-  
वाग्विराजिनि अन्तर्यामिनि  
आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविकरूपिणि  
समस्त विद्यालोके सञ्चारिणि ॥ ४ ॥

सुज्ञानैश्वर्यं सम्प्रदायिनि  
दिव्य भावोद्दीपनं मुदकारिणि  
सद्भक्तोद्धानं कल्पतरुं रूपिणि  
गीतसुधाढर्षिणि वीणापाणि ॥ ५ ॥

### १३ लक्ष्मीदेवी गीतम्

पञ्चबाणं जनकप्रिये विजये  
प्रसीदं मम भक्ताश्रये ॥ पल्लवि ॥

माधव पादसेवा तत्परे  
वेदवेत्तं मोदप्रमोदाधारे  
शमदमादि षट्सम्पदकारिणि  
वैकुण्ठलोकेश्वरं भामिनि ॥ १ ॥

सदाचारं सम्पन्नं संरक्षिणि  
व्यसनलोचनं जनपरिवर्तिनि  
साधुसेवानिरतं कृपासागरि  
यज्ञशेषं प्रियं श्रिताभयकरि ॥ २ ॥

सद्गुणपालकं सुजनश्रेयस्करी  
सत्कर्मलीनं दीनजनसम्पत्करि  
नित्यानन्दकरि त्रिभुवनसुन्दरि  
श्रीङ्गारं बीजाक्षरि गीतसुधाकरि ॥ ३ ॥

## १४ लक्ष्मी गीतम्

श्री विष्णुवल्लभे शुभे पालय मां  
भक्तसुलभे दिव्यप्रभे पोषय माम् ॥ पल्लवि ॥

वैकुण्ठाधीश्वरि अरुणाम्भरि  
सौन्दर्यरत्नाकरि भुवनानन्दकरि  
सौभाग्यदायिनि गीतसुधास्वादनि  
कृपावर्षिणि अष्टलक्ष्मिभूषिणि ॥ १ ॥

सरोरुडगन्धिनि सरोरुड लोचनि  
सर्वकलेशदूरिणि कारुण्य पुष्करिणि  
शोकमोहनाशिनि नाकसृष्टिकारिणि  
दारिद्र्यध्वंसिनि पुण्यकलदायिनि ॥ २ ॥

## १५ सरस्वती गीतम्

श्लोकम् श्री सरस्वतीं मयूरवाहिनीं  
श्वेतवस्त्रान्वितां श्वेतपद्मासनां  
जपमाला पुस्तकलस्तां  
गीतसुधानुतां अमयां अक्षयां  
अडर्निशं उपास्महे  
विद्यादायिनि शारदे  
शिरसुभकारिणि वरदे ॥ पल्लवि ॥

कामरूपिणि पातक नाशिनि  
कमल लोचनि कमलज राणि  
कञ्चपि वीणापाणि कल्याणि  
सङ्गीत साहित्य सुधावर्षिणि ॥ १ ॥

ज्ञानविज्ञान तृप्ति दायिनि  
अविद्या वारिधि तारिणि  
सकलशास्त्र विचार रत्नाकरि  
सकलकला रसिके ज्ञानेश्वरि ॥ २ ॥

## १६ सरस्वती गीतम्

माण्डिक्य वीणा पाणि  
 माधुर्यं रसवाहिनी ॥ पल्लवि ॥  
 सकल इलास्वादनि इत्याणि  
 सकल विद्यास्वामिनि गीर्वाणि  
 सकल शास्त्र सञ्चारिणि रञ्जनि  
 सकलान्तर्यामिनि निरञ्जनि ॥ १ ॥  
 सकल संवेदनाज्ञानरूपिणि  
 विकलात्म पावनि गीतसुधा तोषिणि  
 मलिन मनो वृत्ति निरोधिनि  
 नलिनीदलमम्बुवत् संरक्षिणि ॥ २ ॥  
 सरिगम पदनि सप्तस्वररागिणि  
 स्वर व्यञ्जन रत्नमाला शोभिनि  
 प्रणवनाद वलयान्तर्यापिनि  
 सर्वाक्षर दीप्तिप्रसारिणि ॥ ३ ॥

## १७ वासवी गीतम्

श्री वासवीदेवि त्वमेव सृष्टिशक्तिः  
 श्री देवदेवि त्वमेव पालनशक्तिः  
 श्री परदेवि त्वमेव संसार शक्तिः  
 नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ पल्लवि ॥  
 पेनुगोण्ड प्रतिष्ठित दिव्य वनितामणि  
 पराशक्त्यवतारिणि वासवि कृपावीक्षणि  
 विरूपाक्ष प्रियसोदरि भवतारिणि  
 कुसुमाम्ब कुसुमाप्यनन्दिनि रञ्जनि ॥ १ ॥  
 धर्मरत्नस्य प्रदीपिनि जननि  
 धर्मध्वजारोडण प्रोल्वासिनि  
 सुगुण नवरत्न मालासंयोजनि  
 सारस चरण सुशोभिनि पावनि ॥ २ ॥

अहिसोद्यम सञ्चालिनि त्यागप्रत पालिनि  
आत्मबलिदान रत वैश्यकुल पथदर्शिनि ।  
विराडूप प्रदर्शिनि गीतसुधा वालिनि  
आर्द्रदृद्य पुष्करिणि कविपुङ्गव वरदायिनि ॥ ३ ॥

### १८ ललिता गीतम्

श्रीयङ्क सिंहासनाधीश्वरि  
श्रीविद्योपासक शुभङ्कुरि ॥ पल्लवि ॥  
सुमेरुमध्य प्रासादस्थिते  
सुरतरु सुरधेनु सुरगाणाश्रिते  
धीशक्ति मनोशक्ति तनुशक्ति वृद्धस्तुते  
धराधीश योगीश नुते श्रीललिते ॥ १ ॥  
मन्त्र तन्त्र यन्त्र बलव्यापिनि ।  
देव दैत्य कृत तपःसमदर्शिनि  
भक्त परिरक्षिणि गीतसुधा मोदिनि  
थराथर स्वामिनि सद्योभुक्तिदयिनि ॥ २ ॥

### १९ वाणी गीतम्

डे ललितकला स्वाराज्य स्थापिनि  
डे लेपन वाचन नन्दन विहारिणि ॥ पल्लवि ॥  
सत्य प्रतिपादना पुष्करिणि वाणि  
समस्त ज्ञवकुल भाषान्तर्यामिनि  
सर्व ज्ञवकुल भाषान्तर्वाहिनि  
नाद गगन सञ्चारिणि श्रद्धां भक्तिं देहि मे ॥ १ ॥  
सत्यलोकवासिनि श्वेतलंसवाहिनि  
सर्व विध शास्त्र विराडूपिणि  
सर्व चित्तवृत्ति निरोधकारिणि  
शुभ वस्त्रधारिणि श्रद्धा भक्तिं देहि मे ॥ २ ॥  
राजस तामस भाव कलुषनिवारिणि

राग तान पल्लवि शिखरारोडिणि  
 परामानस शास्त्र विभेदिनि  
 गीतसुधा तोषिणि श्रद्धा भक्तिं देडि मे ॥ ३ ॥

## २० वाग्देवी गीतम्

मधुर वाग्विलास रञ्जनी  
 मधुर भावमेघयान तोषिणी  
 स्मरामि सततं ध्यायामि अनवरतम् ॥ पल्लवि ॥

सङ्गीत साम्राज्य पालनकरी  
 साहित्य स्वाराज्य स्थापनकरी  
 अन्यथा ग्राह्यग्राह्यां श्रेताम्भरां  
 अग्राह्यापडरणा यतुरां  
 स्मरामि सततं  
 ध्यायामि अनवरतम् ॥ १ ॥

सरसिजोद्भव सतीं सरस्वतीं  
 सरसवतीं रसवतीं रतीं  
 विद्याश्रयां सत्यालयां  
 विक्षिप्त चित्त शुभोदयां  
 स्मरामि सततं  
 ध्यायामि अनवरतम् ॥ २ ॥

## २१ पर्वती गीतम्

यतुर्वेद साम्राज्ञि रक्ष मां  
 यतुर्दश भुवन जननि संरक्ष माम् ॥ पल्लवि ॥

सख्यिदानन्दरूपिणि निरञ्जनि  
 नित्य शुद्ध भुक्त मुक्तरूपिणि  
 देव व्यूढ रक्षिणि दैत्यगण ध्वंसिनि  
 धैर्यरथैर्य दायिनि गीतसुधारञ्जनि ॥ १ ॥

डिमगिरि नन्दिनि उरप्रियरमणि

પણિત પામર પૂજા પ્રમોદિનિ  
કેસરિવાહનિ કલિમલવિદૂરિણી  
સત્કર્મ સદ્ભાવ સૌશીલ્યતોષિણિ ॥ ૨ ॥

ભક્તિભાવ માધુર્ય પ્રોલ્લાસિનિ  
ષોડશાર્ચનાકૈકુર્ય વરદાયિનિ  
કૈલાસવાસિનિ કુમતિહારિણિ  
શિવગણ નર્તન ગાયનાહ્લાદિનિ ॥ ૩ ॥

### ૨૨ દક્ષિણામૂર્તિ ગીતમ્

રાજયોગ ચક્રવર્તિ કૃપયા મામવ  
દક્ષિણામૂર્તિ ગુરુમૂર્તિ મામવ ॥ પલ્લવિ ॥

માતઙ્ગ ચર્મામ્બર હે શકુર  
ભસ્માઙ્ગરાગધર ત્રિશૂલધર  
કૈલાસેશ્વર ગૌરીમનોહર  
જટાજૂટધર પાપદહનકર ॥ ૧ ॥

અદ્ભુતગાત્ર હે પરમપવિત્ર  
મદનાન્તક હે લલાટ નેત્ર  
ષણ્મુખ ગજમુખ લીલાવિહાર  
પન્નગહાર શિષ્યોદ્ધાર ॥ ૨ ॥

બ્રહ્મતત્વ પ્રતિપાદકોડસિ  
અદ્વૈતાનુભવ પ્રસારકોડસિ  
સર્વત્ર માં કુરુ યોગયુક્તં  
પ્રસન્નાત્મા કુરુ માં નિજભક્તમ્ ॥ ૩ ॥

### ૨૩ લક્ષ્મી ગીતમ્

વૈકુણ્ઠ નિલયે વાત્સલ્યહૃદયે  
પાહિ માં દુગ્ધસાગર તનયે ॥ પલ્લવિ ॥

વિષ્ણુ મનોહરિ ચન્દ્રસહોદરિ  
સત્યાનન્દકરિ સદાભયકરિ

कमलकुसुमलस्ते रक्ताम्बरि  
कमलासनस्थिते विश्वम्बरि ॥ १ ॥

महिमातिशय रूप वावयवति  
कान्तिवति शान्तिमति रति सुमति  
लोकमाते गीतसुधायन्द्रके  
अर्लीष्टदाते अणुमलदीपिके ॥ २ ॥

जडलक्ष्मि रूपेण द्रव्यराशिव्यापिनि  
येतनलक्ष्मि त्वं ज्ञवकोटिजननि  
अष्टलक्ष्मिरूपिणि सर्वशक्तिप्रदे  
ऋषीन्द्र मुनीन्द्र पूजये मुक्तिप्रदे ॥ ३ ॥

## र४ शिवगीतम्

समाधि वल्मीके शिव परमानन्द  
मां योगस्थं कुरु निजानन्द ॥ पल्लवि ॥

नवभाव नयनाश्रु सङ्गमे त्वां  
दृष्टयाकाशे कथं पश्यामि  
बहुजन्म कृतयोग कुलप्रद  
कुरु मां तपोप्रियं आचार्येन्द्र ॥ १ ॥

कारुण्य सागर त्यागि योगि विरागि उर  
ज्ञानगङ्गाधर प्रणव गीतसुधाकर  
ॐ नमश्शिवाय धृति पञ्चाक्षराः  
तव दिव्यमन्त्राः तव यौगिक तन्त्राः ॥ २ ॥

## र५ माधव गीतम्

देदीप्यमान ज्योतिस्वरूप  
ध्यानदर्शित सगुणस्वरूप ॥ पल्लवि ॥

वेद सृष्टिकारण श्री माधव  
वेदमन्त्र शक्तिप्रद श्री केशव  
सम्यग्ज्वन प्रद श्रीधर

सम्यग्दर्शन कारण श्रीकर ॥ १ ॥

धर्मक्षेत्र परिरक्षाणार्थं

कर्मक्षेत्र संविधानार्थं

युगयुगे त्वं मर्त्यलोके

दिव्य मानुषीम् तनुमाश्रितः ॥ २ ॥

गीताचार्यं ते ज्वलितकर

गीतामृत लोल वेशुगानयतुर

ते विश्वगुरु शरणागतोद्धार

प्रसीद प्रसीद कृपासागर ॥ ३ ॥

### २६ मुरलीधर गीतम्

भुवनैक सम्मोडनाकारं

शिरसा नमामि मुरलीधरम् ॥ पल्लवि ॥

देवकी वसुदेव प्रिय किशोरं

यशोदानन्द चित्तापहरं

कालुष्यदूरम् विश्वाधारं

कारुण्यपूरं विश्वाकारम् ॥ १ ॥

तुलसीमालाधरं ज्वेश्वरं

सभपृष्ठ नायकम् नवनीतयोरं

रासलीलालोलं ज्ञानेश्वरं

गीतसुधालोलं योगेश्वरम् ॥ २ ॥

### २७ गोपाल गीतम्

गोवर्धन गिरिधर गोपाल

त्राहि मां अष्टदिकपालक पालक ॥ पल्लवि ॥

नीलमेघश्याम वैकुण्ठधाम

श्री विष्णुमूर्ति पुरुषोत्तम

वारिरुड शङ्ख यङ्क गधाधर

शेषतल्प शयन पीताम्बरधर ॥ १ ॥



विश्व सृजन पालन लय कारण  
 वैनतेय गमन श्रीदेवी रमण  
 तत्त्वदर्शि निर्गुण सूक्ष्मदर्शि चिद्धन  
 गुणदर्शि गुणतीत गीतसुधा रञ्जन ॥ २ ॥

### २८ श्रीराम गीतम्

श्री रामचन्द्र वात्सल्यसान्द्र  
 रघुकुल पीयूषसागर चन्द्र ॥ पल्लवि ॥  
 धरासुता वल्लभ रविप्रभ  
 सुगुणैश्वर्य भिक्षां देहि  
 गम्भीरस्वभाव सर्वात्मभाव  
 दशरथ प्राणप्रिय धनकुलोद्भव ॥ १ ॥  
 नित्यसमीपवर्ति मारुतीसेव्य  
 सर्व राममयमित्यनुभववेद्य  
 नवविध भक्तोपास्य कोट्यधर  
 अयोध्या सार्वभौम लङ्काधीशधर ॥ २ ॥  
 जनकवचन परिपालकराम  
 जनकनन्दिनी सौमित्री समेत  
 विपिनवासे सुभद्रुभ समदर्शि  
 गीतसुधाश्रय हे सत्यदर्शि ॥ ३ ॥

### २९ श्रीधर गीतम्

क्षीराब्धि सुकुमारि मनोडर  
 क्षीराम्भोनिधि मथनाधार ॥ पल्लवि ॥  
 सर्वकरण सुन्दर शान्ताकार  
 सर्वशुभेश्वर लोकोद्धार  
 समस्त थराथर स्वरूपधर  
 त्रिमूर्ति रूप सद्गुरु दामोदर ॥ १ ॥

धर्मक्षेत्र सञ्चार सुजनमन्दार  
वेदज्ञानसार श्रीधर मुदकर  
असुरसंसार गुणगम्भीर  
प्राणाम्यडम् त्वां गीतसुधाकर ॥ २ ॥

### ३० वासुदेव गीतम्

दामोदरं रुक्मिणी मनोहरं  
भावयामि वसुदेव सुकुमारम् ॥ पल्लवि ॥  
सडस्राराद्रि योगिसदृशितं  
चिद्रुडान्तर्निवासितम् स्मितं  
सडस्र कोटि भानुप्रकाशं  
साधुसन्त सद्भक्त लृट्येशम् ॥ १ ॥  
यादवकुलेशं शुभदायकं  
वैकुण्ठधामेशं दीनोद्धारकं  
दैवशिभामणिं प्राज्ञचिन्तामणिं  
धर्मकर्म मर्मज्ञसुधीमणिम् ॥ २ ॥  
श्यामल शरीरं मातुल कंसहरं  
व्याकुल चित्त पाण्डवोद्धारं  
गीतसुधाकरं वेणुगानयतुरं  
गीतामृत दोग्धां मोहापहरम् ॥ ३ ॥

### ३१ वरलक्ष्मी गीतम्

मल्लिका यम्पका सेवन्तिका  
मालिकालङ्कृता हरिपदसेविका ॥ पल्लवि ॥  
भक्तधेनुका कृपायन्त्रिका  
संरक्षयतु मां भवतारका  
समृद्धिवाटिका सम्पोषिणी  
सर्वसिद्धिकारिणी गीतसुधावनी ॥ १ ॥  
सुगन्धमय सरोरुधधारिणी

सुकुमलारुण उस्तशोभिनी  
श्रीवरलक्ष्मी वैकुण्ठस्वामिनी  
क्षीराब्धिमथने जन्मधारिणी ॥ २ ॥

शुक शौनक तुम्बुरु नारदादि  
मुनि योगि गण सङ्घीर्तता  
सिद्ध साध्य यक्ष किन्नर किंपरुष  
गन्धर्व देवासुर वृन्दसेविता ॥ ३ ॥

### ३२ गौरी गीतम्

यतुर्दश भुवन जननि नमस्ते  
कैलासवासिनि गौरि नमस्ते ॥ पल्लवि ॥

ताण्डव प्रिय परशिवसहिते  
वास्यप्रिये ज्वपपात्रमुदिते  
प्रकृतिपुरुष सङ्गमभवेन  
त्वं विश्वपालिनि विश्वरक्षिणि ॥ १ ॥

गजवदन षड्दहन धीभल प्रदर्शिणि  
त्रिशूलधारिणि त्रिनेत्रभामिनि  
भृङ्गि नन्दादि शिवगणविनुते  
स्तोत्रसंप्रीते गीतसुधाश्रिते ॥ २ ॥

### ३३ केशव गीतम्

सनातन धर्मसारथिं स्मर  
क्षीरसागर राजसुतापतिं स्मर ॥ पल्लवि ॥

करणव्यूहं संयम्य प्रतिदिनं  
कायरथे स्मर आत्मानं रथिनं  
सुदुष्कर मनोगतिं नियम्य  
केशव यरणाब्जे मन आधत्स्व ॥ २ ॥

शिष्टजन परिरक्षकं दृष्टजन शिक्षकं  
विशिष्ट योगार्थि परिवर्तकं

शुवनियामकम् जगन्त्रियन्त्रकं  
जगदोद्धारकं स्मर गीतसुधारकम् ॥ २ ॥

### ३४ विष्णु गीतम्

वन्देऽहं श्री महाविष्णुं  
जिष्णुं प्रभविष्णुं त्रिषिष्णुम् ॥ पल्लवि ॥

वन्दे सरोरुडनाभं अन्तर्मुष सुलभं  
श्यामलप्रभं श्री सत्यनारायणं  
नलिनलोचनं लृटयाकर्षणं  
वन्दे नागकुलाधीश शयनम् ॥ १ ॥

मडिमन्वित सुदर्शन यङ्कधरं  
अतिशय बलपूर्णा गधाधरं  
गीतसुधापावनं सख्यरित भयडरणं  
ध्यान गान योग यात्रा तोषणम् ॥ २ ॥

### ३५ सरस्वती गीतम्

शारदे वरदे मां ज्योतिर्गमय  
श्वेतदंडसगामिनी सुपथे गमय ॥ पल्लवि ॥

नीरक्षीर विवेकं प्रयच्छ  
कलादेवि आत्मसुप्तं प्रयच्छ  
जपमाला पुस्तकधारिणि वाणि  
विद्यासम्पद्धलं मे यच्छ ॥ १ ॥

नादसुरङ्गे प्रज्ञां स्थापयसि  
स्वर तरङ्गे रसलोके विहरसि  
अक्षरान्तरङ्गे भावलास्यं करोषि ।  
अक्षय गीतसुधासरिता प्रियोऽसि ॥ २ ॥

### ३६ दक्षिणामूर्ति गीतम्

डे दक्षिणा मूर्ति बोधय मां  
डे ज्ञानविज्ञान मूर्ति प्रेरय माम् ॥ पल्लवि ॥  
राजयोग विद्या रडस्थं  
विश्वादिगुरुमूर्ति त्वया ज्ञातं  
डे ज्ञानवृद्ध भवरोगवैध  
सर्वगुरुवन्द्य ऋषिमुनिवैध ॥ १ ॥  
डे शुवाधार शुवनाधार  
वेदवेदान्त सार निगमगोचर  
जनन मरण तारण्यतुर  
सर्वदा ध्यानस्थ योगभास्कर ॥ २ ॥

### ३७ श्रीकृष्ण गीतम्

अन्यथा शरणं नास्ति श्रीनिधि  
पयोनिधिवास इपानिधि ॥ पल्लवि ॥  
अक्षयाम्बरप्रद यद्वंशतिलक  
पाण्डव रमणी मानसंरक्षक  
षोडश सदस्र गोपिकाविमोचक  
षोडश कलापूर्णा कुब्ज वनितोद्धारक ॥ १ ॥  
देवकी वसुदेव त्यागयोगाश्रय  
राधा रुज्जिणी प्रेमयोगमोदाश्रय  
वेणुगानप्रिय अक्षयाव्यय  
गीताबोधक गीतसुधाप्रिय

### ३८ सरस्वती गीतम्

शुभङ्कुरि अमयङ्कुरि वीणापाणि  
सृष्टिकर्म संलग्न भ्रज्जरमणि ॥ पल्लवि ॥  
अज्ञात वास स्थित संस्कारान्  
सुज्ञात विधानेन नियन्त्रसि

વિધવિધ સ્પન્દન વિજ્ઞાન ચન્દ્રકે  
ત્વમેવ જ્ઞાનપ્રદે પ્રજ્ઞાદીપિકે ॥ ૧ ॥

વાગ્દોષ વારિણિ લોકમૈત્રિ રક્ષિણિ  
સર્વાક્ષર માલિનિ અભિવ્યક્તિકારિણિ  
સદ્ધર્ષસમયે સુપથદર્શિનિ  
સંપ્રાપ્તિ સમયે યશોકીર્તિ દાયિનિ ॥ ૨ ॥

સર્વ સ્પન્દન માધુર્ય પ્રહર્ષિણિ  
નૃત્ય ગાન સાહિત્ય ક્ષેત્રપોષિણિ  
ચિત્ર શિલ્પ વૈભવ સૌન્દર્યમયિ  
જપમાલાધારિણિ ગીતસુધામયિ ॥ ૩ ॥

### ૩૯ રાજરાજેશ્વરી ગીતમ્

ત્રિભુવનોલ્લાસિનિ માં પાહિ  
ત્રિદેહ સગ્ચાલિનિ જ્ઞાન દેહિ ॥ પલ્લવિ ॥

શ્રીરાજ રાજેશ્વરિ ભક્તિદે  
શ્રીમત્સિંહાસનાસીને મુક્તિદે  
શ્રીમાતે જડચેતનાત્મિકે  
શ્રીયુતે સગુણ નિર્ગુણાત્મિકે ॥ ૧ ॥

પરાપરા વિદ્યાપ્રકાશિનિ  
ગીતસુધાવનિ સિંહવાહનયુતે  
શ્રીહરિ ચતુરાસ્ય ગજાસ્થપિત નુતે  
રક્તબીજાસુર્મર્દનમુદિતે દૈત્યમર્દિનિ ॥ ૨ ॥

### ૪૦ શ્રીહરિ ગીતમ્

લીલામાનુષ વિગ્રહ શ્રીહરિ  
લક્ષ્મીરમણ પ્રસીદ મુરારિ ॥ પલ્લવિ ॥

વિશ્વસ્વામ્યં તવૈવ સર્વદા  
જીવસામ્યં ત્વચ્ચૈવ ગોવિન્દ  
તવ સમક્ષમતાનુભવે મમ

प्रज्ञां प्रतिष्ठापय सुभधाम ॥ १ ॥

सनक सनन्दनादि ऋषिसेवित  
धृव प्रह्लाद विभीषणाद्यर्थित  
सङ्कल जपयोगध्येय गीतसुधाकर  
शङ्खचक्रधर धरणीप्रियकर ॥ २ ॥

### ४१ पार्वती गीतम्

भगवतीं बलवतीं पार्वतीं स्मराम्यहं  
धीमतीं श्रीमतीं शाश्वतीं लज्जाम्यहम् ॥ पल्लवि ॥  
धर्मवतीं दयावतीं डैमवतीं उंसवतीं  
सुमुप स्कन्ध सम्पूजित शिवसतीं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥  
नीतिमतीं कान्तिमतीं मानवतीं भानुमतीं  
अनुपम लावण्यवतीं ड्रीमतीं स्मराम्यहम् ॥ २ ॥  
रसवतीं सरसवतीं मधुमतीं शान्तिवतीं  
गीतसुधाश्रितां रतीं गुणवतीं स्मराम्यहम् ॥ ३ ॥

### ४२ विघ्नराज गीतम्

विघ्नराजं सुमतिप्रदायकं  
प्रणमामि सदा मातङ्गमुष्णम् ॥ पल्लवि ॥  
नवरत्न किरीट विराजितं  
भुजग भुजकीर्ति शोभितं  
मूषकगमनं मोदकरं  
प्रणमामि दुरितराशिहरम् ॥ १ ॥  
प्रथमाराधितं गिरिजाशिवसुतं  
ललाटे प्रणवतिलक राजितं  
सिद्धि बुद्धिप्रदं गीतसुधानुतं  
प्रणमामि कुमारकीडासहितम् ॥ २ ॥

### ४३ सरस्वती गीतम्

नादसागरे समस्वर तरङ्गिणि  
भाषान्तर्गामिनी सर्वाक्षराकारिणि ॥ पल्लवि ॥

विद्याप्रदे शारदे वरदे  
सर्वपदार्थं ज्ञानविज्ञानदे  
सृष्टिकर्तृ भामिनि ज्ञानं देहि  
सत्यलोक स्वामिनि मां परिपाहि ॥ १ ॥

शुवान्तरङ्गे शाश्वतवासिनि  
शुवनतरङ्गे तरतमविवेचनि  
मूढत्वदूरिणि भवभीति हारिणि  
गीतसुधावनि सत्यप्रकाशिनि ॥ २ ॥

### ४४ पार्वती गीतम्

अनुपम लावण्यपूर्णां गिरिसुते  
अपरिमित शक्तियुते स्कन्धमाते ॥ पल्लवि ॥

सिद्धिशक्तिरूपिणि सर्वसिद्धिकारिणि  
तपस्विनि तेजस्विनि गीतसुधावनि  
अद्भुत दीक्षाप्रते दक्षनन्दिनि  
अर्धनारीश्वर परमप्रियरमणि ॥ १ ॥

स्वदस्तत्रपित गजमुष्म जननि  
स्वधर्मनिष्ठ शीघ्रोद्धारिणि  
दैवासुर सङ्ग्रामे शिष्टरक्षिणि  
गङ्गानुबन्धे स्नेहारागदर्शिणि ॥ २ ॥

### ४५ लक्ष्मी गीतम्

सद्भक्ति मधुस्वादप्रिये सदृष्टये  
सिन्धूर तिलक शोभिते हरिप्रिये ॥ पल्लवि ॥

सर्वभोग सत्ययोग प्रदायिनि



सर्वकाल ङासिनि सरोजलोचनि  
सम्पत्प्रदायिनि द्रासदूरिणि  
मडालक्ष्मि सदये गीतसुधाभोदिनि ॥ १ ॥

सर्वाभरणा सुन्दरि मोदकरि पावनकरि  
सौन्दर्य रत्नाकरि लुवनेश्वरि  
सञ्चित कर्मराशि दहनकरि  
संरक्ष मां सदा नित्याभयकरि ॥ २ ॥

### ४६ राजराजेश्वरी गीतम्

श्रीमाते राजराजेश्वरि  
श्री ललिते लुवनैकाधीश्वरि ॥ पल्लवि ॥

सत्य शिव सुन्दररूपिणि पालय  
सत्य ज्ञानानन्तरूपिणि तारय  
छल पर सौम्यार्थमलं वारं वारं  
छक्षुयापधरि त्वां प्रणामाम्यलम् ॥ १ ॥

जन्म मृत्यु वृत्ते भ्रमति मम जिवः  
तन्मयकर विषयजाले बन्धितोऽस्मि  
अविद्या गुडे कथं पश्यामि प्रकाशं  
आराधक पावनि गीतसुधा तारिणि ॥ २ ॥

### ४७ श्री ललिता गीतम्

श्री विद्याराध्ये दिव्यशक्तीश्वरि  
श्री यङ्गनिलये भव्य जगदीश्वरि ॥ पल्लवि ॥

पराप्रकृतिरूपे ज्ञानप्रसादिनि  
अपरा प्रकृतिरूपे जिवभावदायिनि  
षड्विकारमय देवभावदारिणि  
सव्यपथ यालिनि मोक्षसुभदायिनि ॥ १ ॥

दिविज कार्य समुद्भूते श्री ललिते  
दीप्ति लावण्य समन्विते पाळि मां

રાજીવ લોચનિ ગીતસુધાવાહિનિ  
પચ્યવિષય સાક્ષિણિ પ્રજ્ઞાપ્રબોદિનિ ॥ ૨ ॥

### ૪૮ મારુતી ગીતમ્

વન્દે સુધીવરં ધીરવરં  
અઞ્જનાદેવી પ્રિયકુમારમ્ ॥ પલ્લવિ ॥  
જાનકીરામ સેવા નિષ્ઠ દૂતં  
ગગનયાન સમર્થમ્ પ્રણીતં  
યોગસિદ્ધીશ્ચરં મહાસન્તં  
વાનરેશં અપરિમિત બલવન્તમ્ ॥ ૧ ॥  
લક્ષ્ણેશ ગર્વહરં ભક્તિપૂર્ણં  
દિવિજવૃન્દ ગણદત્ત દિવ્યશક્તિપૂર્ણં  
સેતુનિર્માણે ગીતસુધાશ્રિતં  
સર્વદા રામનામ સ્મરણનિરતમ્ ॥ ૨ ॥

### ૪૯ નારાયણ ગીતમ્

મધુસૂદન જગદોલ્લાસ કારણ  
પુનરપિ પુનરધ્યાશ્રયામિ ॥ પલ્લવિ ॥  
શ્રીમન્નારાયણ મોક્ષસદન  
શ્રી લક્ષ્મીરમણ જીવપ્રદાન  
કમલપત્ર નયન નલિનચરણ  
શ્રીરઙ્ગધામેશ્વર શશિવદન ॥ ૧ ॥  
મત્સ્ય કૂર્મ વરાહ નરસિંહ વામન  
પરશુરામ રામ કૃષ્ણ બુદ્ધ કલ્કિ  
ઇત્યાશ્ચર્યમય દશાવતારેષુ  
ધર્મપ્રભાકર હે ગીતસુધાશ્રિત ॥ ૨ ॥

५० आञ्जनेय गीतम्

सुरुचिर भक्तिगान विधाधर  
वायुदेवनन्दन भक्तिं देहि ॥ पल्लवि ॥  
सङ्कुटमोचन भीतिहरण  
रामनामजपे विलीन प्राण  
देवेन्द्रादि दिविजगण सन्नुत  
अणिमा मडिमा सिद्धिशक्ति संयुत ॥ १ ॥  
शिवांश सम्भूत भक्ताग्रेसर  
गीतसुधानुत असुरभयङ्कर  
त्रिमूर्ति वरदान पात्र गुणवन्त  
वानरवीर दिव्यगात्र धीमन्त ॥ २ ॥

५१ आञ्जनेय गीतम्

भागवत शिरोमणि मां पाछि  
श्री आञ्जनेय सद्भक्तिं देहि ॥ पल्लवि ॥  
श्रीरामभक्त सार्वभौम  
श्रीमाता सीतान्वेषण यतुर  
सञ्जुविनी पर्वतधर शुभकर  
सम्यग्सेवा परायण धीवर ॥ १ ॥  
बाल्यावस्थे भडुलीलाविनोद  
प्रौढावस्थे अतिमानुष प्रताप  
दिविजद्वैत्यातीत शक्तिसंयुक्त  
गीतसुधानिरत चिरञ्जुवि मुक्त ॥ २ ॥

५२ गशेश गीतम्

अेकदन्तं प्रथमाराधितं  
भावयाम्यहं श्रीगणनाथम् ॥ पल्लवि ॥  
मूलाधारस्थितं विघ्नेशं

मोदकडस्तं सुधीशं गुणेशं  
सडस्र भानुप्रकाशं विशेषं  
पाशाङ्कुशधरम् पातकनाशम् ॥ १ ॥  
परा पश्यन्ती मध्यमा वैभरी  
यत्वारि वागात्मकं गजमुपं  
गीतसुधाकरं विधाधीश्वरं  
शिवकुमारं कार्तिकेय सोदरम् ॥ २ ॥

### प३ कार्तिकेय गीतम्

कार्तिकेय विघ्नराजप्रिय  
देवसैन्याधिप गङ्गातनय । ॥ पल्लवि ॥  
उमा मडेशसुत द्रिव्यप्रभ  
वल्ली देवसेना प्रियवल्लभ  
तारकासुर संडारक  
सत्सन्तान वर प्रदायक ॥ १ ॥  
गुरुमूर्ति स्वरुप सुन्दरमुप षण्मुप  
पलनी क्षेत्रेश कृत्तिकाराधक  
मयूरवाहन गीतसुधावन  
प्रज्ञापूजा देहि सुज्ञानम् ॥ २ ॥  
बाल सुभ्रुवण्य विद्रुतपूर्णा  
वेलायुधधर तेजो पूर्णा  
मम सुप्रसन्नो भव ज्ञानपूर्णा  
व्याधिडर भवव्याधिडर परिपूर्णा ॥ ३ ॥

### प४ श्रीराम गीतम्

निरतिशय गुणसागरयन्त्र  
वन्देऽहं श्रीरामयन्त्र ॥ पल्लवि ॥  
विष्णुमूर्ति विश्रादिदेव  
धर्ममूर्ति कारुण्यभाव

मर्यादा पुरुषोत्तम राम  
सनातन सन्तप्रिय रघुराम ॥ १ ॥  
अयोध्यानगर प्रजासुभ कारण  
सुमित्रासुतानुक्षाण सेवनकारण  
भरत शतृघ्नादि सोदरसम्पूज्य  
सीतामनोहर गीतसुधाराध्य ॥ २ ॥

### पप गौरी गीतम्

श्वेतशैलपति प्रियनन्दिनी  
शुक्लाम्बरधर गणेश जननी ॥ पल्लवि ॥  
कृत्तिका पोषित स्कन्द रञ्जिनी  
कैलासवासिनी गौरी अवतु मां  
षड्रैरि दमनी षड्यङ्गवासिनी  
षडैश्वर्य शालिनी अवतु माम् ॥ १ ॥  
सुवासिनि सम्पूज्य कुण्डलिनी  
सम्प्रीता भवतु गीतसुधावनी  
धर्मगलानि कारक दैत्यमर्दिनि  
सत्कर्मरत संरक्षिणी अवतु माम् ॥ २ ॥

### पङ्क गणेश गीतम्

मनसा स्मरामि पशुपतितनयं  
गाणनाथं सद्यं मङ्गिमातिशयम् ॥ पल्लवि ॥  
कोटिदिनकर प्रकाशं पावनथरणं  
भालयन्द्रं मण्डोदरं गजाननं  
प्रथमार्यन मुदितं भवभीति हरणम् ।  
भक्त्या करोमि मोदकनिवेदनम् ॥ १ ॥  
वङ्कतुण्डं लम्बोदरं  
धीशक्तिप्रदम् मङ्गलाकारं  
गजकर्णिकं षण्मुभाग्रं

गीतसुधाकरं विघ्नराजम् ॥ २ ॥

### प७ वासवि गीतम्

षोडशि वासवि अतिलोकं कान्तिवति  
दृष्टयगुडान्तरे ध्यायामि भगवति ॥ पल्लवि ॥

बाल्यक्रीडा लीला विवासिनि  
काव्य नाट्य सङ्गीत सम्मोदिनि  
रस भाव विचार संयोगध्येये  
प्रतिक्षणं भावयामि निमग्नये ॥ १ ॥

प्रसन्न मनोदीप्तिम् प्रसारय  
मां सर्वदा सुमेधा ज्योतिर्गमय  
घैर्यं स्थैर्यादि सम्पदान् प्रसादय  
कृत्वा मम सारथ्यम् अमृतं गमय ॥ २ ॥

सर्वं शक्तिधारिणि ब्रह्मविष्णु शिवजननि  
सर्वज्ज्वल देवयाना विधायिनि  
सर्वभाव द्विधा निश्चय प्रवर्तिनि  
गीतसुधावनि विश्वरूप प्रदर्शिनि ॥ ३ ॥

### प८ यन्द्रमौलेश्वर गीतम्

यन्द्रमौलेश्वर अर्धनारीश्वर  
ज्वररुदस्यम् प्रबोधय स्मररुद ॥ पल्लवि ॥

समस्त ब्रह्माण्ड प्रभव स्थिति लय-  
कर्तारं त्वामैव निरन्तरं स्मरामि  
व्यष्टि रूपाकारे अणुरूपो त्वं  
समष्टि रूपाकारे मण्डरूपो त्वम् ॥ १ ॥

मयाकृतान् शतशतापयारान्  
क्षमस्व कृपया कैलासेश्वर  
समाधियोगे परमानन्द  
आत्मरतिं प्रद गीतसुधानन्द ॥ २ ॥

प८ श्रीराम गीतम्

जनकीकान्त अद्भुतचरित  
त्वत्समो नास्ति धीर धीमन्त ॥ पल्लवि ॥

अयोध्या साम्राट् मढातेजस्वि  
वने वल्कलधारी असम तपस्वि  
असमान प्रेमनिधि निस्सङ्गमूर्ति  
निरुपम दयानिधि सुधर्ममूर्ति ॥ १ ॥

रघुवंश तिलक भानुकोटि तेज  
पितृवाङ्मय पालक कौसल्यात्मज  
धर्ममर्यादा पुरुषोत्तम सत्यभाषि  
सत्कीर्तित गीतसुधाश्रित मृदुभाषि ॥ २ ॥

६० नाटोपासना पथम्

नाटोपासना पथं सक्षात्कारकं  
न केवलं ज्ञापकं तु परिर्वर्तकम् ॥ पल्लवि ॥

सत्यासत्य संशोधन प्रेरणदायकं  
नित्यानित्य विवेचन शक्ति वर्धकं  
धर्माधर्मव्यरण भेदभोधकं  
न्यायान्याय निर्णयबल प्रेरकम् ॥ १ ॥

समीर सुतागस्त्य नारदादि वेद्यं  
त्यागराज दीक्षित श्यामङ्घ्र्याराध्यं  
वाल्मीकि लवकुशास्वादितं  
रागतानमुद्धितं गीतसुधासाधितम् ॥ २ ॥

काय करण मैत्रिसाधकं कलाराधनं  
करण प्राण सप्यसाधकं नाटोपासनं  
छ्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति सम्मिलनं  
रसऋषि दर्शित पवित्रभावोद्दीपनं कलावन्दनम् ॥ ३ ॥

टेलेन्द्रिय मनो बुद्धि वाद्यैः मधुर वादनं  
 सुश्राव्य समस्वर राग तान पल्लव्यालापनं  
 सर्वाक्षर सशक्त बीजमन्त्र पठने देवदर्शनं  
 सर्व देवनमन क्रियाचरणे द्वैतभाव दूरीकरणम् ॥ ४ ॥

### ६१ मारुती गीतम्

सुवीरं सुधीरं सुधीवरं  
 शूरं भवतरण यतुरं स्मरामि ॥ पल्लवि ॥  
 अघराशिडरं आजन्म बलशालिं  
 अञ्जना डेसरिकुमारं मनसा स्मरामि  
 अपूर्व गुण बल स्थैर्यसंयुतं  
 सीताराम पदकुमुद स्थितम् ॥ १ ॥  
 रामनाम वैभव मडिमानिरतं  
 अश्रु रवेद कम्पनयुत गानरतं  
 योगसिद्धीश्वरं भक्तिनिधीश्वरं  
 गीतसुधाकरं कपीश्वरं मनसा स्मरामि ॥ २ ॥

### ६२ गौरी गीतम्

सुरुथिर विधां देडि मे गौरि  
 मनोरथ प्रदे माडेश्वरि ॥ पल्लवि ॥  
 अन्तर्याग निष्ठाराधिते ललिते  
 अन्तर्यामिनि आधन्तरडिते  
 अन्तरसागर तरङ्ग साक्षिणि  
 अन्तर्बाधिनि स्थिरचित्तपालिनि ॥ १ ॥  
 आत्म सिंहासनासीने स्मितवदने  
 आत्मतत्व प्रकाशमय दयालोचने  
 अर्पित यतुरन्तःकरण डान्तिमथि  
 आर्जित बलरक्षिणि गीतसुधामथि ॥ २ ॥



### ६३ श्रीधर गीतम्

ॐ पुरुषोत्तम करुणाक्ष श्रीधर  
 ॐ परमगुरो मम यक्षुरुन्मीलय ॥ पल्लवि ॥  
 गुरुप्रवचने तु नव नव पाठं  
 परिशित पदव्यूहे अपरिशित भावं  
 अनुदिनाभ्यासे नवनवान्तरायाः  
 साधकवत्सल तान् निवारय ॥ १ ॥  
 क्षणिक सुभ्ररङ्गे न रमते ज्ञानी  
 नित्यसुभान्वेषणे तुष्यति योगि  
 तव पदकमले भृङ्गोऽस्मि केशव  
 गीतसुधा प्रिय ॐ गोविन्द माधव ॥ २ ॥

### ६४ शिद्रूपिणी गीतम्

शिदग्नि समुद्भव परशिवे  
 शिन्तित इलप्रदे दयार्णवे ॥ पल्लवि ॥  
 असक्ति योग गङ्गावाहिनि जननि  
 अवीद्याङ्गुलिणि श्रवसम्भोडिनि  
 समश्चित्तत्वं प्रसादय विश्वव्यापिनि  
 शमदमौशक्तिं प्रयच्छ धीप्रकाशिनि ॥ १ ॥  
 अनुदिनं तव स्वाद्युनामार्यनं  
 अर्पितभावे करिष्ये सङ्कीर्तनं  
 समस्त दितितनुज समूहध्वंसिनि  
 शर्वाणि कल्याणि गीतसुधामोदिनि ॥ २ ॥

### ६५ भारती गीतम्

भारती धीमती रससरस्वती  
 भक्त्या भजामि यतुरास्यसतीम् ॥ पल्लवि ॥  
 प्रतिभावे प्रतिस्पन्दने मम विकसने

પ્રતિ વિચારે પ્રતિક્રિયે મમ ગ્રહણે  
તવ કૃપાદૃષ્ટિરેવ યશસ્કરં  
તવ નવસૃષ્ટિરેવ દીપ્તિકરમ્ ॥ ૧ ॥

પ્રતિભોદીપિનીં ત્વાં ભજામિ  
કલા તરડ્ગિણીં નવરસવર્ષિણીં  
જીવ શુદ્ધિકારિણીં ભજામિ જનનીં  
લલિત કલાસ્વાદિનીમ્ વિદ્યાસઞ્જીવિનીમ્ ॥ ૨ ॥

શ્વેતવસ્ત્રધારિણીં સંશયચ્છેદિનીં  
કચ્છપિ વીણા વાદનાનુરઞ્જિનીં  
દૃદય પુસ્તકાધ્યયન ગુરુકુલે  
જીવભાવત્યાગાર્થ ત્વાં ભજામિ ॥ ૩ ॥

### ૬૬ ત્રિપુરસુન્દરિ ગીતમ્

શ્રીમદ્ત્રિપુરસુન્દરિ શ્રીકરિ  
શ્રીમત્સિંહાસનાધીશ્વરિ રક્ષ મામ્ ॥ પલ્લવિ ॥

હ્રીકુાર તરુવલ્લરિ ત્રિપુરેશ્વરિ  
લોકોત્તર સૌન્દર્ય રત્નાકરિ  
ઇક્ષુ ચાપ પાશાકુશધરિ અભયકુરિ  
ઇન શાશિ નયન કાન્તિધરિ મોદકરિ ॥ ૧ ॥

દશપ્રાણ સ્પન્દનકારિણિ માહેશ્વરિ  
ચરાચરાત્મિકે સર્વ રક્ષાકરિ  
ધર્મકર્મ નિષ્ઠાપ્રત વરાભયકરિ  
ચારિત્ર્ય રક્ષાકરિ ગીતસુધાકરિ ॥ ૨ ॥

### ૬૭ પઞ્ચાયતન પૂજા

પઞ્ચાયતન પૂજા કુરુ હે ગૃહસ્થિ !  
પઞ્ચભૌતિક ત્રિદેહશુદ્ધિ કુરુ ॥ પલ્લવિ ॥

ભાસ્કરોપાસનેન તનુસ્વાસ્થ્યં  
વિદ્નેશ્વરાર્યનેન સર્વકાર્યં સિદ્ધિઃ

पराम्भिकाराधनेन ठंडपरकृलप्राप्तिः  
 शिवचरणासेव्या ज्ञानविरागलाभः ॥ १ ॥  
 केशवोपासनेन यतुर्विध पुरुषार्थ-  
 सिद्धिर्भवति श्रेयोपथे गमयति  
 अद्वैतदर्शि श्री शङ्कर गुरुभोषित  
 विज्ञानमय ज्ञानं विद्धि गीतसुधानुत ॥ २ ॥

### ६८ कमलाक्ष गीतम्

कमलाक्ष लोकरक्षणा तत्पर  
 कमलनाभ कलुषराशि दहनकर ॥ पल्लवि ॥  
 कमलारमण भवपाशहरण  
 कमनीयवदन शेषतल्प शयन  
 क्षीराब्धिमथन कमलाकार धारण  
 पितामह भन्धन मोचनप्रवीण ॥ १ ॥  
 प्रेमयोगेश्वर वसुदेवनन्दन  
 दृपदसुताक्षय पात्रा लोला  
 दृपदसुताक्षयाम्बर प्रदान  
 पाडि मां कमलदललोचन ॥ २ ॥  
 परमप्रेमपूर्णा भक्त निवेदित  
 कुसुम पत्र जल कृल स्वीकारत्रिय  
 साक्षात् श्रीदेवी सेवितचरण  
 समस्त ज्वाश्रित धरारमण ॥ ३ ॥

### ६९ माधव गीतम्

मा विस्मर मां डे कृपानिधि  
 माधव मधुसूदन दयानिधि ॥ पल्लवि ॥  
 डे सृष्टिकर्ता सर्वज्जवभर्ता  
 त्वत्कृपा मात्रेण धन्योऽस्मि त्राता  
 दीर्घकालाविधा कारागुडे

बन्धितं मां कथं मुक्तं करोषि ॥ १ ॥

विषय विषयि विवेचनं दत्त्वा  
ध्यातृ ध्यान ध्येय भेदं बोधय  
ज्ञातृ किं ज्ञेयं किं वद निश्चित्य  
आत्मसुषुप्ति प्राप्ति याने मां गमय ॥ २ ॥

### ७० वाणी गीतम्

भवसागरात् मां तारयतु वाणी  
वेदवाङ्मय जन्नी वीणापाणी ॥ पल्लवि ॥

श्रुति स्मृति सागरे नाविका भवतु  
बुद्धि व्यवसाये दीपिका भवतु  
द्वन्द्व समये तु स्थैर्यं ददातु  
अतिशयानुभवे आनन्दं ददातु ॥ १ ॥

परिवार मध्ये भावशुद्धिं ददातु  
ध्येयसाधने अनुकूलं ददातु  
अन्तर्भूत गमने प्रज्ञां स्थापयतु  
गीतसुधागाने रसवाहिनी भवतु ॥ २ ॥

### ७१ गणनाथ गीतम्

पराशरात्मज नुतं गणनाथं  
वन्दे महाभारत लिपिकर्तारम् ॥ पल्लवि ॥

सुखित्र सुन्दर रूपाकारं मडोदारं  
सुधीवरं मनोरथ पूरण यतुरं  
अनुत्तम बुद्धिप्रकाशकरं शुभकरं  
पाशाङ्कुशधरं मडोदरम् ॥ १ ॥

सिद्धि बुद्धि शुद्धि तेजोदायकं  
सर्व विधाधारं भवाब्धितारकं  
ऋषि मुनि दिविजादि प्रथमार्यितं  
गिरिजा सम्भवं गीतसुधानुत्तम ॥ २ ॥

### ७१ केशव गीतम्

कन्दर्प जनक कौन्तेयास सभ  
केशव तव स्मरणे तुष्यामि ॥ पल्लवि ॥

क्षीराब्धीश नन्दिनी रमण  
क्षीराब्धि सदन गीतसुधावन  
मन्दलासपूर्णा मनोहरवदन  
मर्त्यलोक जिविकोटि रक्षण ॥ १ ॥

त्रितापाग्नि शमन त्रिभुवन चालक  
त्रिगुण पोषक त्रिभुवन पालक  
अप्रमेय निरामय तन्मय  
स्वप्रकाश धराधीश चिन्मय ॥ २ ॥

### ७३ पुरुषोत्तम गीतम्

पुरुषोत्तम ते नारायण  
अक्षयानन्द सुनिकेतन ॥ पल्लवि ॥

अवतार विशारद गोविन्द  
अवनी प्रियरमण प्रमोदप्रद  
भुवनकण्ठक दैत्य गण मर्दन  
भवाम्बुनिधि मग्न समुद्ररण ॥ १ ॥

कमलदल लोचन दयार्द्र हृदय  
शङ्खचक्रधर ममाशु तारय  
त्वत्तः परतरं नास्तीति घोषितोऽसि  
त्वया विनाडमस्मि गीतसुधास्तुत ॥ २ ॥

### ७४ मुरलीलोल गीतम्

सर्वशक्ति मूल मुरलीलोल  
सर्वतन्त्र जाल यादवपाल ॥ पल्लवि ॥

मातुल कंसद्वेष सङ्घर्ष  
 देवकी वसुदेव दुष्टयसंस्पर्श  
 शकट धेनुक पूतनी भग्नजन  
 स्वीकुरु देव मम नीराजनम् ॥ १ ॥

राजयोगेश्वर गानविद्यक्षरा  
 राजविद्याधीश प्रपन्नाधीन  
 नृत्य वाद्य स्वाद्य परमलीन  
 सत्य नित्य मोदन्बोध गीतसुधावन ॥ २ ॥

### ७५ राघव गीतम्

अयोध्या साम्राज्य यङ्कवर्ति  
 लवकुशजनक रामचन्द्रमूर्ति ॥ पल्लवि ॥

प्रजा स्नेह प्रेम मोदाधार  
 धर्मभर्यादा रक्षणा तत्पर  
 जनकी प्राणेश श्रितपारिजात  
 लनुमत्सेवित वानर वरदात ॥ १ ॥

पुत्रकामेष्टि मलायागसम्भव  
 विश्वकल्याण प्रिय मृदुभाव  
 सर्वदा स्मरामि मां न विस्मर  
 सौमित्रि सोदर गीतसुधाकर ॥ २ ॥

### ७६ काञ्चि कामाक्षि गीतम्

त्वमेव श्रीमाते कञ्चि कामाक्षि  
 त्वमेव वरदाते काशी विशालाक्षि ॥ पल्लवि ॥

त्वमेव सुभदाते विश्वैक करुणाक्षि  
 त्वमेव संप्रीते मधुरापुत्रि मीनाक्षि  
 त्वमेव यतुर्दश भुवनैक जननि  
 त्वमेव ज्ञान भक्ति कर्म दर्शिनि ॥ १ ॥

भडिरन्तर्व्यापिनि सर्वशक्ति याविनि  
 संवित्स्वरुपिणि श्रीविद्यारुपिणि  
 डैवल्य दायिनि मनोरथ पूरणि  
 शिवकामिनि रञ्जनी गीतसुधावनि ॥ २ ॥

### ७७ मुरलीधर गीतम्

आश्रयामि मुरलीधरं  
 मोदकरं निगमागमसारम् ॥ पल्लवि ॥

ज्ञानसागरं कारुण्यपूरं  
 निजगल राजित नवरत्नडारं  
 अद्भुतालङ्कार सुशोभितं  
 तुलसी माला प्रिय तेजोयुतम् ॥ १ ॥

अलौकिक निरुपम सौन्दर्यमूर्ति  
 अगणित गुणपूर्णां अवतारमूर्ति  
 कौस्तुभमणि कान्तिपूर्णा वक्षस्थलं  
 गिरिधरं अघडरं डरं निर्मलम् ॥ २ ॥

तव दर्शनाय नेत्रशक्ति कुण्ठितं  
 तव दर्शनाय मनोशक्तिरपर्याप्तं  
 तव लीलाविलासाय धीबलमल्पं  
 सदा स्मरामि गीतसुधास्तुतम् ॥ ३ ॥

### ७८ लम्बोदर गीतम्

कार्तिकेयाञ्ज विघ्नराज  
 स्थिरचित्तं प्रसादय भास्करतेज ॥ पल्लवि ॥

प्रणवनादोपासक गणनायक  
 प्रपञ्च मोडडर बुद्धिप्रदायक  
 मडाद्भुत गात्र अग्रपूजापात्र  
 गिरिराज दौडित्र सूक्ष्मनेत्र ॥ १ ॥

वशीकृत मूषकासुर क्षराक्षर

पाशाङ्कुशधर नागाभरणधर  
परशिवात्मज कालुष्यदूर  
मोदक प्रिय ओकदन्त गीतसुधाकर ॥ २ ॥

### ७९ पाण्डुरङ्ग गीतम्

श्रीरङ्गनाथ कृपारक्षितोऽस्मि  
श्री पाण्डुरङ्ग पदाब्जे भृङ्गोऽस्मि ॥ पल्लवि ॥  
भुजगेन्द्र शयन पक्षिराज गमन  
भवपाश मोचन ज्वजन्म पावन  
मन्दस्मित वदन रवि रजनी नयन  
पुनीतं कुरु मां सुविधेयावन ॥ १ ॥  
शङ्भयक गधाधर विह्वलरूपधर  
मेघिनी रक्षाकर असुरसंडार  
श्रीरङ्गधामेश्वर गीतसुधाकर  
श्रीलक्ष्मी प्राणेश्वर मनोहर ॥ २ ॥

### ८० श्रीराम गीतम्

धनवंशसोम राम  
कोदण्डराम पट्टाभिराम  
राम पाछि श्रीराम पाछि ॥ पल्लवि ॥  
वैदेडीप्रिय मडपुण्योदय  
राम पाछि श्रीराम पाछि  
मारुति सेवित मुनिजन संस्तुत  
राम पाछि श्रीराम पाछि ॥ १ ॥  
त्रिजगत्कारण त्रिभुवन पोषण  
राम पाछि श्रीराम पाछि  
राज्ज्व लोचन दीनजनावन  
राम पाछि श्री राम पाछि ॥ २ ॥  
करुणासागर धीर धनुर्धर



प्रतधर अघडर साकार  
 भयडर नरवर शतृभयङ्कर  
 गुणगम्भीर ओङ्कार ॥ ३ ॥  
 मडिमासार वेदाधार  
 श्रीकर शुभकर मन्दार  
 परप परात्पर वीरात्रेसर  
 क्षर अक्षर जगदाधार ॥ ४ ॥

### ८१ स्कन्दमाता गीतम्

मडेश्वर भामिनि गिरिराज नन्दिनि  
 सुविशेष सुकुर्म रङ्गविहारिणि ॥ पल्लवि ॥  
 मम चित्तसागर मथनं कुरु  
 मे प्रयच्छ सद्भक्ति नवनीतं  
 वात्सल्य पुष्करिणि डे स्कन्दमाते  
 समाह्लाद दायिनि स्कन्दाग्रजनुते ॥ १ ॥  
 चिच्छक्ति संयुते ज्ञवपावनप्रते  
 धृच्छा ज्ञान डिया शक्तित्रय सडिते  
 शिवताडवेन सड वास्यरञ्जनि  
 सर्वशक्ति तरङ्गिणि गीतसुधावाडिनि ॥ २ ॥

### ८२ गायत्री गीतम्

चित्त मन्थन तन्त्र प्रबोधय  
 वेदजननि मम बुद्धि प्रयोदय ॥ पल्लवि ॥  
 सत्य ज्ञानानन्तडुपिणि सौधामिनि  
 सत्यमोदकारिणि प्रोल्वासिनि  
 सत्य मधुर वाग्वाडिनि भवतारिणि  
 मेधाशक्ति संवर्धिनि जननि ॥ १ ॥  
 सवित्रिशक्तिधारिणि सावित्रि  
 सुगीत सुधास्वदिनि गायत्रि

વિશ્વામિત્ર ઋષિ તપો પ્રસાદિનિ  
વાદ સંવાદ બાધા નિવારિણિ ॥ ૨ ॥

### ૮૩ દેવકી નન્દન ગીતમ્

સાન્દીપની ગુરુકુલ સંશોભિત  
યાદવેશ નન્દન યશોદાપ્રિયસુત ॥ પલ્લવિ ॥

જ્ઞાનસિંહાસનાધીશ્વર  
યોગેશ્વર નિજ યોગીશ્વર  
વસિષ્ઠ વામદેવ ગૌતમાદિ  
ઋષિમુનિ વેદ્ય ગીતસુધાસેવ્ય ॥ ૧ ॥

મત્સ્ય કૂર્મ વરાહ નૃસિંહ વામન  
પરશુરામ રામ કૃષ્ણ બુદ્ધ કલ્કીતિ  
દશાવતારરૂપધર શાસ્ત્રાચાર્ય  
ગોપિકાસુખવર્ધન ગીતાચાર્ય ॥ ૨ ॥

રાધા પ્રાણસખ રુક્મિણી રમાણ  
યશોદા મમતાધીન નિરઞ્જન  
કુચેલવત્સલ વિદુર ભીષ્મરાધ્ય  
શિશુપાલમર્દન ગીતસુધારાધ્ય ॥ ૩ ॥

### ૮૪ દુર્ગા ગીતમ્

જીવ શુભકુરિ દુર્ગા માતે  
લોક વશકુરિ હે જગત્રાતે ॥ પલ્લવિ ॥

હરિ હર બ્રહ્મ દત્ત શક્તિરૂપિણિ  
દિવિજવૃન્દ દત્તાયુધ ધરિણિ  
શુભનિશુભ્માદિ દૈત્યમર્દિનિ  
રક્તબીજાસુર અક્ષયરૂપાપોશિનિ ॥ ૧ ॥

સચ્છક્તિ ચન્દ્રકે સપ્તમાતૃકે  
કરુણાક્ષી ભવ નવ દુર્ગાત્મિકે  
કરાલ રૂપધરિ દુર્જનભયકુરિ

सौम्यरूपधरि सुजनभयापहारि ॥ २ ॥

नानायुधधरि नानाभूषणधरि  
गीतसुधाधरि नयन मनोहरि  
सौन्दर्य सागरि धर्म स्थापनकरि  
सख्यिदानन्दकरि ज्ञवपावनकरि ॥ ३ ॥

### ८५ अनन्त पद्मनाभ गीतम्

अनन्तशयन पुरवास अच्युत  
अनन्त पद्मनाभ विश्वातीत ॥ पल्लवि ॥

पूर्णाकाम धनश्याम मोक्षधाम  
कुरु मां कृतकृत्यं अनन्तनाम  
अनुपम सौन्दर्य लावण्यमूर्ति  
निरुपम भवलीलानन्द मूर्ति ॥ १ ॥

सकल द्विविचारित वैकुण्ठधाम  
सकल भव गुण युत गीतसुधाधाम  
ध्येयलीन चित्ते प्रकाशयसि  
गेय तल्लीन मोदते विहरसि ॥ २ ॥

विराट् स्वरूप जगदादिमूल  
विचित्र चराचर सृष्टिपूर्वकाल  
देश काल दिशातीत परब्रह्म रूप  
प्रतिज्ञव लृटये ज्ञवब्रह्म रूप ॥ ३ ॥

### ८६ गोविन्द गीतम्

प्रणवोपास्य हरि गोविन्द  
प्रपञ्चाधार सख्यिदानन्द ॥ पल्लवि ॥

त्वमेव दूर्विज्ञेय तत्त्वस्वरूप  
सन्निहितो भव विज्ञानप्रदीप  
मनोयाञ्चल्य द्रोषविदूर  
मनोहर छितकर पीताम्बरधर ॥ १ ॥

यतुर्बाहु सलित शङ्खगधाधर  
सुदर्शन यकाम्बुजधर श्रीधर  
वैजयन्ति मालालङ्कृत वासुदेव  
गीतसुधाकर देवादिदेव ॥ २ ॥

### ८७ भुवनेश्वरि गीतम्

आत्मतत्त्व प्रकाशिनी त्वमेव  
भुवनेश्वरी ज्व विवासिनी त्वमेव ॥ पल्लवि ॥

समस्त यरायर येतनरुपिणि  
संस्कृति प्रवर्धिनि प्रकृति संरक्षिणि  
सत्वशीलस्य धृत्युन्साह प्रदायिनि  
दुराचार वश विध्वंसिनी त्वमेव ॥ १ ॥

त्रिगुण गण वैलक्षण्य स्थापिनि  
त्रिजगद्व्यापिनि त्रिलोक सञ्चारिणि  
क्षण क्षण परिवर्तित ज्वजगद्रक्षिणि  
गीतसुधा विनोदिनी त्वमेव ॥ २ ॥

### ८८ अयोध्यानाथ गीतम्

धृक्वाकु कुलजातं अयोध्यानाथं  
भवतारणं नमामि शिवनुतम् ॥ पल्लवि ॥

सूर्यवंशतिलकं श्रीराम यन्त्रं  
सुविशेष सद्भाव सुगुणसान्द्रं  
शिरञ्जुवि पवनज वानरसिंह संसेयं  
शिदानन्दपूर्णा गीतसुधासंस्तुत्यम् ॥ १ ॥

अस्त्र शस्त्र विशारदं दशरथकुमारं  
विश्वमोहनरूपं सीताप्राणेश्वरं  
लङ्केश रावण कुम्भकर्ण गर्वहरं  
विभीषण धर्मध्वजरोडण्डरम् ॥ २ ॥

## ८९ ललिता गीतम्

चिन्तामणि प्रासाद निवासिनि  
चित्त प्रसादं यच्छ दयानयनि ॥ पल्लवि ॥

श्री ललिते छे त्रिपुरसुन्दरि  
श्रीमाते व्रीङ्कार तरुवल्लरि  
कदम्ब विपिन सञ्चारिणि  
कोमल कर यरणि शोभिनि ॥ १ ॥

क्षराक्षररुपिणि अक्षय सुभटे  
क्षमासनासीने कामित वरटे  
उपनिषत्सार सुधावर्षिणि  
उपासकोद्धारिणि गीतसुधावनि

## ९० कृष्ण गीतम्

सुन्दराति सुन्दरं वेणुलोलयरणं  
मधुराति मधुरं वेणुप्रिय वादनम् ॥ पल्लवि ॥

षड्दर्शनकार योगीन्द्र ज्ञेयं  
षड्पु दमनम् गीतसुधाध्येयं  
ऋयजुस्सामार्थर्षा वेद्यं  
ऋषि मुनि देव मानव गेयम् ॥ १ ॥

श्रीकृष्ण प्राणं वेणुस्पर्शसुभं  
श्रीकृष्ण स्नेहमूलं राधाह्वानं  
जन्म साकृत्यधनं कृष्णसम्भाषणं  
नवविध भक्तिगानं ज्ञानोद्दीपनम् ॥ २ ॥

## ९१ पार्थसारथि गीतम्

वसुदेव सञ्जात श्रितपारिजात  
वेणुनादमुद्धित शृणु मम गीतम् ॥ पल्लवि ॥

धर्म संस्थापक अधर्मि नाशक

नारीकुल मानजुवन संरक्षक  
कुरुसमरे त्वं पार्थसारथि  
प्रतिजुव देउरथे त्वमेव रथि ॥ १ ॥

निगम सारामृतास्वादक  
योगशास्त्र शिष्यर प्रतिष्ठित ध्वज  
ललितकला वारिधि रत्नशोधक  
गीतसुधालोल कस्तूरि तिलक ॥ २ ॥

### ॢ२ मडलविषुगु गीतम्

श्रीमडलविषुगुं स्वयम्प्रकाशं  
वन्देडं जिषुगुं धीप्रकाशम् ॥ पल्लवि ॥

वन्दे सिन्धुनन्दिनी रमणं  
वरदं यारु नलिनीपत्र नयनं  
सुभदं तं सख्यित्सुभ प्रदानं  
सदृशन सुदृशन यकधारिणम् ॥ १ ॥

पङ्कुरुड नालं पङ्कुरुड यरणं  
पङ्कुरुड डस्तं सङ्कर्षणं  
डामोदरं वामनं प्रधुम्नं  
गीतसुधानुतं श्रीरङ्गधामम् ॥ २ ॥

### ॢ३ त्रिजगन्मोडिनी गीतम्

विषकण्ठ रमणि डिमार्द्रि तनये  
विघ्नराज स्कन्धजननि सदये ॥ पल्लवि ॥

मम भावगीतं वडतु तव पद पत्रे  
मम स्पन्दन स्रोतं वडतु तव हृत्पत्रे  
अपूर्वं मनोशक्ति संवर्धनि  
अक्षय सृजनशक्ति प्रसादिनि ॥ १ ॥

त्रिशूलधारिणि डेसरिवालनि  
त्रिजगन्मोडिनि त्रिभुवनपालिनि

अनन्य भक्तिरस प्रदायिनि  
आनन्दसागरि गीतसुधावनि ॥ २ ॥

### ८४ गङ्गा गीतम्

शिवजटावासिनि गङ्गाभवानि  
महेश्वर भाग्निनि मनुकुल पावनि ॥ पल्लवि ॥

शतशतापयाराणि मया कृतानि  
दुरितक्षयं कुरु डिमाद्रिवासिनि  
करुणाएवि भेधराहित्यं प्रद  
धारिणी स्नान प्रमोदिनि सुरुचिरे ॥ १ ॥

धर्मसम्पन्नं सुपुनीतं मां कुरु  
शुवकोटि प्राणाधारे मधुरे  
गौरीसोदरी क्षमस्व गम्भीरे  
गीतसुधामोदिनि अपूर्व नीरे ॥ २ ॥

### ८५ सरस्वती गीतम्

सरस्वती माते भव मदीयात्म सप्ती  
सर्वदा अडमस्मि लौकिके ओकाडी ॥ पल्लवि ॥

न जानामि मम जन्मकारणं  
न जानामि कौमार यौव्णविधानं  
न शक्नोमि जरा स्वास्थ्यमर्म  
कथं ज्ञेयं ध्येयं मरणरुडस्थम् ॥ १ ॥

भक्षणा समये शिक्षणा समये य  
अडमस्मि ओकाडी पुरुषार्थं ममैव  
तव गान ध्यान सृजन नाट्येऽपि य  
अडमस्मि ओकाडी पुरुषार्थं ममैव ॥ २ ॥

स्वतन्त्र डिया भाव ज्ञानभवान्  
याचयामि त्वयि सल्लुटयस्वामिनि  
मम लुटयनन्दने हे वीणापाणि

कच्छपि नादं कुरु गीतसुधावनि ॥ ३ ॥

### ८६ शारदा गीतम्

सप्त धातुर्भय शरीरे शारदे  
गुप्तगामिनि त्वमसि कथं वरदे ॥ पल्लवि ॥

स रि ग म प द नि स्वरान्तर्यामिनि  
नवरस स्वाद्गु सुधावर्षिणि  
अनन्त राग नन्दन सञ्चारिणि  
अक्षर नाद सम्मिलन तोषिणि ॥ १ ॥

षड्ज, रिषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम  
दैवत, निषादेति सप्त स्थान निवासिनि  
राग तान पल्लवि मेरु शिखर स्थापिनि  
वैभरी वाग्विलासे प्रोल्वासिनी ॥ २ ॥

प्रस्थानत्रय शास्त्र भाव प्रकाशिनि  
पुराणोत्तिहास नीतिबोधिनि  
ग्रन्थरथनकारस्य सृजनपूर्वे  
साक्षात्कारिणि गीतसुधावनि ॥ ३ ॥

### ८७ दाक्षायणी गीतम्

तव भक्तोऽहं त्वयि रक्तोऽहं  
तव समक्षमे सदाशक्तोऽहम् ॥ पल्लवि ॥

डिमार्द्रि सुकुमारि लोकशुभङ्गुरि  
महेश्वर प्रियकरि कैलासेश्वरि  
अधर्मशील राक्षस भयङ्गुरि  
वर त्रिशूलधरि गीतसुधाकरि ॥ १ ॥

सार्वकालिक सार्व देशिक जननि  
सर्वज्ञान सत्यस्वर्गपिणि भवानि  
दाक्षायणि कात्यायनि शीलरक्षिणि  
नन्दे भुङ्गि शिवगण नाट्योल्वासिनि ॥ २ ॥



## ८८ आत्माराम गीतम्

मा शुभः रे मानव भुवनालये  
मधुरं न किञ्चित् सर्वं भ्रान्तिमयं आनन्दधामम् ॥ पल्लवि ॥

आत्मारामं पुरुषोत्तमं सदा  
श्रीरामं स्मृत्वा य ध्यात्वा  
अमनस्कयोगे साकृत् प्राप्स्यसि  
गीतसुधा संलग्नो भव मानव ॥ १ ॥

संस्कार कीडा रङ्गमिदं पश्य  
जयापजयानुभवान् प्रपश्य  
जाग्रत्स्वप्नमिदं मानुष जिवितम्  
जन्म मृत्यु यकमपि त्वया कल्पितम् ॥ २ ॥

सुकृतिनो बलवः सन्ति धर्मपथे  
दुष्कृतिनो बान्धवाः सन्ति कुपथे  
सुभ दुःभ शृङ्खलैर्माशुभ मानव  
सर्वत्र समत्वे सुप्नन्दने विहर ॥ ३ ॥

## ८९ राजराजेश्वरि गीतम्

राजराजेश्वरि त्रिमूर्ति जननि  
आत्मतत्त्व प्रकाशिनि सनातनि ॥ पल्लवि ॥

समस्त थराथर यैतन्य वाडिनि  
संस्कृति प्रवर्धिनि प्रकृतिसंरक्षिणि  
सत्वशीलस्य धृत्युत्साह प्रदायिनि  
दुराथार वश विध्वंसिनि ॥ १ ॥

त्रिगुण गण वैलक्षण्य स्थापिनि  
त्रिजगद्व्यापिनि त्रिदेह प्राणदायिनि  
क्षण क्षण परिवर्तित ज्वलज्वलपाविनि  
स्पन्दनकीडा विनोदिनि गीतसुधामोदिनि ॥ २ ॥

## १०० श्रीविद्या गीतम्

ओङ्कार बीजाक्षरि ङ्रीङ्कार तरुमञ्जरि नीराजनम् ।  
 सर्वाक्षर मालाधरि सौन्दर्य निधीश्वरि नीराजनं  
 पूर्वोन्टु वदने श्रीपद्मचरणे नीराजनं  
 गीतसुधासेयने दयाभरणाम्बुषणे नीराजनम् ॥ १ ॥

श्रीचक्र चिरनिलये ब्रह्माण्ड वलये नीराजनम् ।  
 श्रीविद्या समाश्रये सृष्टिभेलनप्रिये नीराजनं  
 सर्व देवाधीश्वरि योगपीठाधीश्वरि नीराजनं  
 सर्व भक्तवशङ्करि सर्वलोकशुभङ्करि नीराजनम् ॥ २ ॥

काम क्रोध दमनी मोह भ्रान्ति नाशिनि नीराजनं  
 त्रितापविदूरिणि त्रिवर्गकुल दायिनि नीराजनं  
 अन्तरङ्गविडारिणि अन्तर्कलुषडारिणि नीराजनं  
 सदसद्रूपधारिणि सकल विश्वपावनि नीराजनम् ॥ ३ ॥

त्यागगुण समर्थिते स्मरणमात्र उर्षिते नीराजनं  
 नादभिन्टु कलातीते बुधवृन्द निषेविते नीराजनं  
 सत्तगुण संवर्धिनि रजोगुण नियन्त्रिणि नीराजनं  
 तमोपाश भोयनि गुणातीतऋषिणि नीराजनम् ॥ ४ ॥

सर्वकलेश निवारिणि सर्वव्याधि प्रशमनि नीराजनं  
 सर्व साधकोद्धारिणि सर्वशक्ति सञ्जिविनि नीराजनं  
 परन्धामवासिनि परतत्त्व प्रबोधिनि नीराजनं  
 आत्मानुभवकारिणि परब्रह्मरूपिणि नीराजनम् ॥ ५ ॥

इति श्रीमती राजेश्वरी गोविन्दराजविरचितं  
 सर्वदेवदेवीसद्भक्तिसुमगुच्छं सम्पूर्णात् ।

## अनुक्रमशिका

- १ गणेशगीतम्
- २ सरस्वती गीतम्
- ३ गायत्री गीतम्

- ४ सरस्वती गीतम्
- ५ लक्ष्मी गीतम्
- ६ दुर्गा गीतम्
- ७ सरस्वती गीतम्
- ८ सरस्वती गीतम्
- ९ राजराजेश्वरि गीतम्
- १० लक्ष्मी गीतम्
- ११ दुर्गादेवी गीतम्
- १२ सरस्वती गीतम्
- १३ लक्ष्मीदेवी गीतम्
- १४ लक्ष्मी गीतम्
- १५ सरस्वती गीतम्
- १६ सरस्वती गीतम्
- १७ वासवी गीतम्
- १८ ललिता गीतम्
- १९ वाणी गीतम्
- २० वाग्देवी गीतम्
- २१ पर्वती गीतम्
- २२ दक्षिणामूर्ति गीतम्
- २३ लक्ष्मी गीतम्
- २४ शिवगीतम्
- २५ माधव गीतम्
- २६ मुरलीधर गीतम्
- २७ गोपाल गीतम्
- २८ श्रीराम गीतम्
- २९ श्रीधर गीतम्
- ३० वासुदेव गीतम्
- ३१ वरलक्ष्मी गीतम्
- ३२ गौरी गीतम्
- ३३ केशव गीतम्
- ३४ विष्णु गीतम्
- ३५ सरस्वती गीतम्

- ३६ दक्षिणामूर्ति गीतम्  
 ३७ श्रीकृष्ण गीतम्  
 ३८ सरस्वती गीतम्  
 ३९ राजराजेश्वरी गीतम्  
 ४० श्रीछरि गीतम्  
 ४१ पार्वती गीतम्  
 ४२ विद्यराज गीतम्  
 ४३ सरस्वती गीतम्  
 ४४ पार्वती गीतम्  
 ४५ लक्ष्मी गीतम्  
 ४६ राजराजेश्वरी गीतम्  
 ४७ श्री ललिता गीतम्  
 ४८ मारुती गीतम्  
 ४९ नारायण गीतम्  
 ५० आञ्जनेय गीतम्  
 ५१ आञ्जनेय गीतम्  
 ५२ गणेश गीतम्  
 ५३ कार्तिकेय गीतम्  
 ५४ श्रीराम गीतम्  
 ५५ गौरी गीतम्  
 ५६ गणेश गीतम्  
 ५७ वासवि गीतम्  
 ५८ चन्द्रमौलेश्वर गीतम्  
 ५९ श्रीराम गीतम्  
 ६० नाटोपासना पथम्  
 ६१ मारुती गीतम्  
 ६२ गौरी गीतम्  
 ६३ श्रीधर गीतम्  
 ६४ सिद्धपिङ्गी गीतम्  
 ६५ भारती गीतम्  
 ६६ त्रिपुरसुन्दरि गीतम्  
 ६७ पञ्चायतन पूजा

- ६८ कमलाक्ष गीतम्  
 ६९ माधव गीतम्  
 ७० वाणी गीतम्  
 ७१ गणनाथ गीतम्  
 ७१ केशव गीतम्  
 ७३ पुरुषोत्तम गीतम्  
 ७४ मुरलीलोल गीतम्  
 ७५ राघव गीतम्  
 ७६ काञ्चि कामाक्षि गीतम्  
 ७७ मुरलीधर गीतम्  
 ७८ लम्बोदर गीतम्  
 ७९ पाण्डुरङ्ग गीतम्  
 ८० श्रीराम गीतम्  
 ८१ स्कन्दमाता गीतम्  
 ८२ गायत्री गीतम्  
 ८३ देवकी नन्दन गीतम्  
 ८४ दुर्गा गीतम्  
 ८५ अनन्त पद्मनाभ गीतम्  
 ८६ गोविन्द गीतम्  
 ८७ भुवनेश्वरि गीतम्  
 ८८ अयोध्यानाथ गीतम्  
 ८९ ललिता गीतम्  
 ९० कृष्ण गीतम्  
 ९१ पार्थसारथि गीतम्  
 ९२ मङ्गलविष्णु गीतम्  
 ९३ त्रिजगन्मोहिनी गीतम्  
 ९४ गङ्गा गीतम्  
 ९५ सरस्वती गीतम्  
 ९६ शारदा गीतम्  
 ९७ दाक्षायणी गीतम्  
 ९८ आत्माराम गीतम्  
 ९९ राजराजेश्वरि गीतम्

१०० श्रीविद्या गीतम्

Composed by Rajeswari Govindraj

Encoded and proofread by Rajeswari Govindraj

---



*Sarva Deva Devi Sadbhakti Sumaguchcham*

pdf was typeset on September 16, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

